RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

सोषल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों कीसृजनात्मकता, आवासीय पृष्ठभूमि एवं उनकी अन्तर्क्रिया के संदर्भ में प्रभाव का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

Shalini Ratoria

Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan (India)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
शासकीय विद्यालय सृजनात्मकता सोषल मीडिया

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण (Survey) प्रकार का शोध था, जिसमें मध्यप्रदेष के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के कुल 453 चयनित न्यादर्ष पर सर्वेक्षण किया गया। प्रस्तुत शोध का निम्न उद्देष्य था–उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सोषल मीडिया उपयोग स्तर, आवासीय पृष्ठभूमि एवं उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।प्रस्तुत षोध की अग्र परिकल्पना थी –उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सोषल मीडिया उपयोग स्तर, आवासीय पृष्ठभूमि एवं उनकी अन्तर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कुल 453 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों में 214 छात्र एवं 239 छात्राएँ थे। प्रस्तुत षोध के प्रदत्त विष्लेषण हेतु उद्देष्य अनुरुप '2 x 2 कारकीय प्राकल्प द्विमार्गीय प्रसरण विष्लेषण' का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए– 1.उच्चतर माध्यमिक स्तर के'सोषल मीडिया गैर–उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, 'सोषल मीडिया उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से सार्थक रूप से उच्च पायी गयी।, 2. 'षहरी' एवं 'ग्रामीण' आवासीय पृष्ठभूमिवाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।, एवं 3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं 'आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

1. प्रस्तावना

विज्ञान ने आज इस युग को नए मुकाम पर ला दिया है। इसका श्रेय सूचना एवं तकनीकी के क्षेत्र को जाता है। सूचना एवं तकनीकी के इस क्षेत्र के द्वारा आज हम विष्व में घटित घटनाओं को सीधे अपने कमरे में चाय पीते हुए देख सकते हैं। इन सबका श्रेय मीडिया अथात् जन संचार माध्यमों को जाता है। जनसंचार का अर्थ किसी बड़े समूह के साथ यांत्रिक माध्यम के द्वारा संवाद स्थापित करना है। सोषल मीडिया एक प्रमुख जनसंचार माध्यम है।

'सोषल मीडिया' वेब प्रणाली पर आधारित एक ऐसी आभासी दुनिया है, जिसमें दुनिया भर के लोग कम्प्यूटर/ लेपटॉप या मोबाइल की सहायता से आपस में विचारों, सूचनाओं, भावनाओं इत्यादि का आदान– प्रदान करते हैं। आज सोशल मीडिया के कारण पूरी दुनिया एक विश्वग्राम में बदल चुकी है । यह दुनिया भर के लोग इनके द्वारा आपस में विचारों, सूचनाओं, भावनाओं इत्यादि का आदान– प्रदान करते हैं। यह संचार का सबसे सषक्त माध्यम है। यह लोगों को षिक्षित करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह जनता को अपने शासक स्वयं चुनने और अपने कानून स्वयं बनाने हेतु पर्याप्त जागरूकता, प्रबल जनमत के विकास करने एवं लोकतंत्र की रक्षा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न ज्वलंत समस्याओं जैसे– शिक्षा प्रणाली, लिंग अनुपात, सांप्रदायिकता, जातिवाद, आरक्षण, बेरोज़गारी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध आदि के बारे में लोगों को जागरूक बनाता है। इन मुद्दों पर विभिन्न चर्चाओं, वाद–विवाद, साक्षात्कारों, बहस या सर्वेक्षणों के माध्यम से आम जनता को सूचना प्रदान करता है और उन्हें शिक्षित करता है। यह राष्ट्र की एकता व अखंडता, जीवन मूल्य, पर्यावरणीय चेतना जागृत करने, समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करने, आम आदमी की आवाज बनने आदि कार्यों में अपनी भूमिका निभाता है।यह हमारी रुचियाँ व अभिरुचियाँ, सुख व दुःख के पलों और मौज–मस्ती के पलों को साझा करना का एक साधन है।यह ज्ञान प्रदान करने के साथ मनोरंजन कर एक प्रमुख साधन है।

जहाँ एक ओर इसके सकारात्मक प्रभाव है, वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी है। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव युवा पीढ़ी और उनके संबंधों पर होता सोशल मीडिया के ज़्यादा इस्तेमाल से युवाओं को इनकी लत लग जाती है। बच्चे इसके माध्यम से गलत वेबसाइटों का भी इस्तेमाल करते है, जोकि उनके भविष्य को नुकसान पहुँचा रहा है। इसमें साइबर अपराध, अश्लील वेबसाइट, जैसे नुकसान भी शामिल है। इससे युवाओं की याद्दाश्त कमज़ोर हो रही है। वे अपने कार्यों के प्रति एकाग्रता खो रहे हैं। उनमें चिंता एवं तनाव में वृद्धि हो रही है। इसके कारण वैवाहिक संबंध भी खराब होते देखे गए हैं। सोशल मीडिया पर कुछ भी दिखाने नाम पर, केवल पफूहड़ता और अश्लीलता परोसी जा रही है। यह सोशल मीडिया मासूम लड़कियों के साथ कई प्रकार के अपराधों ओर उनके शोषण का जरिया बनता है। कई भ्रामक विज्ञापनों का प्रसार कर वे

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आम जनता की भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे हैं। व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण समाचारों को तोड़–मरोड़ कर वे सच्चाई को गलत ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं।

2. अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक षब्द

प्रस्तुत शोध कार्य के शीर्षक में अग्र पारिभाषिक षब्द का उपयोग हुआ है–

1 सोषल मीडिया–

'सोषल मीडिया' वेब प्रणाली पर आधारित एक ऐसी आभासी दुनिया है, जिसमें दुनिया भर के लोग कम्प्यूटर/ लेपटॉप या मोबाइल की सहायता से आपस में विचारों, सूचनाओं, भावनाओं इत्यादि का आदान– प्रदान करते हैं।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर–

उच्चतर माध्यमिक स्तर से अभिप्राय कक्षा 11 एवं 12 में पढने वाले विद्यार्थियों से है।

3. सृजनात्मकता–

सृजनात्मकता का सामान्य किसी व्यक्ति की वह विषेषता है, जिसमें परम्परागत पद्धतियों से अलग हटकर नवीनता एवं मौलिकता का समावेश कर कार्य किया जाता है। यदि कोई कार्य इस प्रकार किया जाए कि उस कार्य को ऐसे किसी अन्य व्यक्ति ने ना किया हो, तब वह कार्य सृजनात्मकता माना जाता है।

4. आवासीय पृष्ठभूमि–

आवासीय पृष्ठभूमि का तात्पर्य यहाँ विद्यार्थियों के निवास स्थान से हैं, जो ग्रामीण या शहरी क्षेत्र हो सकता है।

3. औचित्य

जैसा कि पूर्व में वर्णन किया जा चुका है कि जहाँ एक ओर सोषल मीडिया की अपनी सकारात्मक भूमिका निभाता है, वहीं इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी देखे गए हैं। सोषल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी विषेषकर किषोरों और उनके संबंधों पर पड़ता है। किसी भी समाज/राष्ट्र का प्रमुख आधार स्तम्भ, उस समाज/राष्ट्र का किषोर व युवा वर्ग होता है। सोषल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव इतना भयावह है, जो सारी सामाओं एवं बंधनों को तोड़कर, समाज/राष्ट्र के आधार किषोर/युवा वर्ग को सर्वाधिक प्रभावित करता है एवं उस समाज/राष्ट्र को भीतर से खोखला कर सकता है। सोषल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी विषेषकर किषोरों और उनके संबंधों पर देखा गया है। इस वर्ग में भी सर्वाधिक संवेदनषील उच्चतर माध्यमिक स्तर के अर्थात् कक्षा 9 से लेकर 12वीं तक के विद्यार्थी होते हैं, विषेषकर कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थी। अतः इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, इस बात की स्पष्ट आवष्यकता प्रतिपादित होती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों में सोषल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव किस हद तक व्याप्त है, इसकी जाँच की जावें तथा निकट भविष्य में उसे इनके विभिन्न नकारात्मक प्रभावों से दूर भी रखा जा सकें। इन बातों के परिप्रेक्ष्य में शोधिका द्वारा प्रस्तुत अध्ययन का चयन किया गया। **वज़ा (2018),गैरली (2017), जोषी (2017), कायरून निषा (2017),पूर्णिमा (2016), रजानी (2016),राय (2016), सनाज़ (2016), सक्सेना (2016),धर (2011), काले (2011), पुरकर, मिश्रा एवं सिन्हा (2008), षैली (2008), षिन्दे (2008), मिश्रा एवं सिन्हा (2007), विजय (2007), सलीम (1998), मुखर्जी (1997), वर्मा (1996), रथ एवं सक्सेना (1995), हरिकृष्णन (1992), मेरी (1992), व्यास (1992), सिंह (1991), मुखोपाध्याय (1990), रेड्डी (1990), त्रिपाठी एवं शुक्ला (1990), गांगुली (1989), कपुर (1987), बरार (1987), जगन्नाथ (1986), मिश्रा (1986), गुप्ता (1985), भटनागर तथा बोगार्डिया (1984), अरुणा (1981), जरियाल (1981), पांडे (1981), मेनन (1980), नायर (1978), कुमारी (1975) एवं खेर (1971)** के द्वारा किए गए पूर्व षोधों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि**मध्यप्रदेष** के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोषल मीडिया के प्रभाव का ऐसा कोई शोध कार्य शोधिका द्वारा नहीं पाया, जिसमें सोषल मीडिया के प्रभाव का शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदत, सृजनात्मकता और व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन किया गया हो। इससे प्रस्तुत शोध कार्य की आवष्यकता प्रतिपादित होती है। अतः उपरोक्त तथ्य को ध्यान मे रखते हुए प्रस्तुत षोध षीर्षक "मध्यप्रदेष के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोषल मीडिया के प्रभाव का शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदत, सृजनात्मकता और व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन" का षोधिका द्वारा चयन किया गया।

4. समस्या कथन

प्रस्तुत षोध का समस्या कथन अग्र है –

सोषल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, आवासीय पृष्ठभूमि एवं उनकी अन्तर्क्रिया के संदर्भ में प्रभाव का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

5. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का निम्न उद्देष्य था–

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सोषल मीडिया उपयोग स्तर, आवासीय पृष्ठभूमि एवं उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. परिकल्पना

प्रस्तुत षोध की अग्र परिकल्पना थी –

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सोषल मीडिया उपयोग स्तर, आवासीय पृष्ठभूमि एवं उनकी अन्तर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

7.न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की समष्टि मध्यप्रदेष के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थी थे। इस समष्टि में से खरगोन जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। इस समष्टि में से न्यादर्ष के चयन हेतु उद्देष्यपरक न्यादर्ष तकनीक का उपयोग किया गया। न्यादर्ष का चयन खरगोन जिले एवं उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के कुल 10 व केवल शासकीय विद्यालयों से किया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर के कुल 453 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों में 214 छात्र एवं 239 छात्राएँ थे। इन विद्यार्थियों में सभी सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं आरक्षित एवं अनारक्षित सभी वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था। इन विद्यार्थियों में सभी विद्यार्थी हिन्दी माध्यम के थे और वे माध्यमिक षिक्षा मण्डल भोपाल म.प्र. में अध्ययनरत् विद्यार्थी थे। शोध कार्य हेतु ग्रामीण एवं शहरी दोनों आवासीय पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। इनमें से कुल 224 ग्रामीण एवं 229 शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों की उम्र 15–19 वर्ष के मध्य थी।

8. शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण (Survey) प्रकार का शोध था, जिसमें मध्यप्रदेष के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के कुल 453 चयनित न्यादर्ष पर मानकीकृत उपकरणों का प्रषासन कर सर्वेक्षण किया गया। प्रस्तुत शोध के मानदण्ड (आश्रित) एवं स्वतंत्र परिवर्ती अग्र प्रकार हैं–

1. **मानदण्ड परिवर्ती–** प्रस्तुत शोध मेंउच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की **सृजनात्मकता** मानदण्ड परिवर्ती था।
2. **स्वतंत्र परिवर्ती–** प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की **''सोषल मीडिया उपयोग स्तर''** एवं **''आवासीय पृष्ठभूमि''**स्वतंत्र परिवर्ती थे। विद्यार्थियों के ''सोषल मीडिया उपयोग स्तर'' परिवर्ती के दो स्तर ''उपयोग कर्ता'' और 'अन– उपयोग कर्ता' थे। ''आवासीय पृष्ठभूमि'' के दो स्तर ''षहरी'' एवं ''ग्रामीण'' थे।

9. उपकरण

प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के ''सृजनात्मकता'', ''सोषल मीडिया उपयोग स्तर'', एवं ''आवासीय पृष्ठभूमि''परिवर्तियों से संबंधित प्रदत्त एकत्रित किए गए। विद्यार्थियों केसोषल मीडिया उपयोग स्तर एवं ''आवासीय पृष्ठभूमि'' परिवर्ती के आकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा 'सामान्य जानकारी प्रपत्र' का उपयोग किया गया। इस प्रपत्र की सहायता से विद्यार्थियों से संबंधित विकल्प पर सही का चिन्ह (✓)अंकित करवा कर प्रदत्त एकत्र किए गए। सृजनात्मकताके आकलन हेतु बाकर मेहदी का सृजनात्मक चिंतन का शाब्दिक परीक्षण (1973) का उपयोग किया गया।

10. प्रदत्त संकलन की प्रकिया

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु अग्र प्रक्रिया का उपयोग किया जावेगा –

- चयनित विद्यालय के प्राचार्यो से शोध कार्यो हेतु अनुमति ।
- न्यादर्ष हेतु चयनित विद्यार्थियों के साथ आत्मीय संबंध की स्थापना ।
- न्यादर्ष के विद्यार्थियों को शोध के उद्देष्य का स्पष्टीकरण।
- सामान्य जानकारी प्रपत्र का प्रषासन।
- ''सृजनात्मकता'' के मानकीकृत परीक्षण मनोवैज्ञानिक का प्रषासन।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की हस्त पुस्तिका में दी गई प्रक्रिया अनुरूप फलांकन।

11. प्रदत्त विष्लेषण

प्रस्तुत षोध के प्रदत्त विष्लेषण हेतु उद्देष्य अनुरुप **'2 x 2 कारकीय प्राकल्प द्विमार्गीय प्रसरण विष्लेषण' (2 x 2 Factorial Design of Two way Analysis of Variance)**का उपयोग किया गया।

12. परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत शोध के उद्देष्य से संबंधित प्रदत्तों के विष्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका 1.1 में दिए गए हैं।

तालिका 1.1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के सन्दर्भ में '2 x 2 कारकीय प्राकल्प द्विमार्गीय प्रसरण विष्लेषण'का सारांष

विचरण के स्रोत	स्वतंत्रता की कोटि (df)	वर्गों का योग (SS)	वर्गों का माध्य योग (MSS)	F मान (F)	सार्थकता स्तर (LOS)
सोषल मीडिया उपयोग स्तर	1	9808.53	9808.53	130.90**	0.000
आवासीय पृष्ठभूमि	1	8.73	8.73	0.12*	0.733
सोषल मीडिया उपयोग स्तर एवं आवासीय	1	169.44	169.44		

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पृष्ठभूमिकी अन्तर्क्रिया				2.26-NS	0.133
त्रुटि	449	33644.27	74.93		
योग	452				

**-0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

NS-0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं

तालिका 1.1 से स्पष्ट होता है, कि 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' के लिए 'F' का मान 130.90 है, जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान स्वतंत्रता की कोटि (df) =1/449 पर 0.00 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 से छोटा है, अतः सृजनात्मकताके संदर्भ में, 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' के लिए 'F' का मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अर्थात् उच्चतर माध्यमिक स्तर के 'सोषल मीडिया उपयोग कर्ता' एवं 'सोषल मीडिया गैर–उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है। अतः इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के 'सोषल मीडिया उपयोग कर्ता' एवं 'सोषल मीडिया गैर–उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकताके माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा'' निरस्त की जाती है। आगे स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के'सोषल मीडिया गैर–उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकताके माध्य फलांक का मान 66.88है, जो कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के'सोषल मीडिया उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकताके माध्य फलांक के मान 57.25 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के'सोषल मीडिया गैर–उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, 'सोषल मीडिया उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकतासे सार्थक रूप से उच्च पायी गयी।

तालिका 1.1 से स्पष्ट होता है कि आवासीय पृष्ठभूमिके लिए 'F' का मान 0.12 है,जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान स्वतंत्रता की कोटि (df) =1/449 पर 0.733 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 से बड़ा है, अतः सृजनात्मकताके संदर्भ में, आवासीय पृष्ठभूमिके लिए 'F' का मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अर्थात् उच्चतर माध्यमिक स्तर के'षहरी' एवं 'ग्रामीण' आवासीय पृष्ठभूमिवाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकताके माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के'षहरी' एवं 'ग्रामीण' आवासीय पृष्ठभूमिवाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकताके माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा' निरस्त नहीं की जाती है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि 'षहरी' एवं 'ग्रामीण' आवासीय पृष्ठभूमिवाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकताके माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका 1.1 से स्पष्ट होता है कि सृजनात्मकताके संदर्भ में, 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं 'आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया के लिए 'F' का मान 2.26है, जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान स्वतंत्रता की कोटि (df) =1/449 पर 0.133 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 से बड़ा है, अतः 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं 'आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया के लिए 'F' का मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अर्थात् उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकतापर 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं 'आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अतः इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना कि 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकतापर 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं ''आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा' निरस्त नहीं की जाती है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकतापर 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं 'आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

13. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के'सोषल मीडिया गैर–उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, 'सोषल मीडिया उपयोग कर्ता' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से सार्थक रूप से उच्च पायी गयी।
2. 'षहरी' एवं 'ग्रामीण' आवासीय पृष्ठभूमिवाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर 'सोषल मीडिया उपयोग स्तर' एवं 'आवासीय पृष्ठभूमि' की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

RRIJM 2015, All Rights Reserved